Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 18th Aug. 2018, Revised on 20th Aug. 2018; Accepted 26th Aug. 2018

शोध आलेख

उभरती हुई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति वृद्धाश्रमवासियों का प्रत्यक्षीकरण

* **डॉ. अलका त्रिपाठी,** व्याख्याता एवं **पर्वत सिंह राठौड,** शोधार्थी
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर
Mob.- 09667017200, E-Mail - www.parvat.rathore@gmail.com

Key words: *भौतिकता, पाश्चात्य संस्कृति, समायोजन आदि।*

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध अध्ययन "उभरती हुई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति वृद्धाश्रमवासियों का प्रत्यक्षीकरण" पर किया गया है। जयपुर जिले में स्थित दो वृद्धाश्रमों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है, प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें शोध उपकरण में शमशाद हुसैन एवं जसवीर कौर द्वारा निर्मित व मानकीकृत समायोजन अनुसूची (SJOAI-2008) एवं स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा प्रदत्तों का गुणात्मक एवं संख्यात्मक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य का निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि आयु के आधार पर अधिकतर वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया। लिंग के आधार पर अधिकतर वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया है। शिक्षा के आधार पर देखने पर सभी में समायोजन स्तर सामान्य स्तर पाया गया। उभरती पीढी में मूल्य संकट व्याप्त है और इन्हे शिक्षा एवं मूल्यों की जानकारी प्रदान करके दूर किया जा सकता है। मूल्य संकट का कारण भौतिकता, पाश्चात्य संस्कृति आदि कारण है, इन्हें शिक्षा एवं परिवार व समाज के सहयोग से दूर किया जा सकता है।

मूल्यों के संकट पर विचार करते समय मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय विस्तृत अर्थों में लिया गया है। जबकि आज व्यक्तित्व पर बहुत संकुचित तथा आज के संदर्भ से परे विचार किया गया है। इस संबंध में आधुनिक ज्ञान ने विस्तार और मनोविज्ञान के गहन रूप में तथा समाजशास्त्र ने विस्तृत रूप में सहायता की है। फलस्वरूप हमारी नैतिकता का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ है।

प्रस्तावना

आधुनिक मौलिक चिंतक **मार्शल** ने समस्याओं के हल के लिए पुराने एक समान तरीके की जगह क्षेत्रीय या बहुविध तरीकों का स्थान दिया। यही बात मूल्यों के क्षेत्र में भी समान रूप से लागू होती है। मूल्यों का केवल उनकी समन्वयवादी प्रकृति के साथ लाभप्रद अध्ययन किया जा सकता है। मूल्यों की सहायता के पृथक्–पृथक् पहलू पर स्वतंत्र रूप से विचार करने की अपेक्षा समग्र रूप से विचार करना उपयोगी लगता है। ऐसा विचार करते समय सम्पूर्ण मनुष्य जीवन पर विवेकी या अविवेकी वैयक्तिक या सामूहिक दृष्टि रखनी चाहिए। वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है वर्तमान गिरते मूल्यों की स्थिति समाज के समक्ष पीढ़ी अंतराल की समस्या उत्पन्न करती है। यह पीढ़ी के बदलते दृष्टिकोण व उपस्थित करती है जिसका परिणाम है वृद्धाश्रम। इस हेतु वर्तमान सामाजिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

- **वृद्धाश्रम** –वृद्धाश्रम से अभिप्राय ऐसी संस्था से है जहां पर व्यक्ति जीवन की अन्तिम अवस्था में किन्ही परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।
- **पृष्ठभूमिक कारक**–पृष्ठभूमिकों कारक के अन्तर्गत लिंग भेद,आयु तथा शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।
- **मूल्य संकट**– प्रस्तुत शोध में मूल्य संकट से तात्पर्य वर्तमान में उभरती हुई पीढ़ी में घटते हुए मूल्यों की स्थिति से है।

अध्ययन का औचित्य

आधुनिकता की ओर बढ़ते युग में प्राचीन मूल्य एवं संस्कृति विलुप्त होती जा रही है जिससे पीढ़ी अन्तराल जैसी समस्याएँ बढ़ी है ऐसी स्तिथि में युवा वर्ग व वृद्ध वर्ग के मध्य खाई बढ़ती जा रही है जिसका परिणाम है– वृद्धाश्रम।

वर्तमान में सामाजिक परिस्थितियों के चलते वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि हुई है इस सामयिक समस्या के चलते शोधार्थी के मस्तिष्क में यह सवाल आया कि समाज में वृद्धों की शोचनीय स्थिति के क्या कारण है? वृद्धाश्रमों में किस आयु एवं स्तर के लोग रह रहे है? वृद्धाश्रमों में इन वृद्धों को क्या सुविधाएँ प्रदान की जाती है? वृद्धाश्रमवासियों का नई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति क्या अभिमत है? ये वृद्ध अपना सामाजिक आर्थिक जीवन किस प्राकर व्यतीत करते है? इस मूल्य संकट को दूर करने हेतु उनके क्या विचार है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूँढने हेतु शोधकर्ता नें "उभरती हुई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति वृद्धाश्रमवासियों का प्रत्यक्षीकरण" समस्या पर शोध कार्य करने का मानस बनाया । जो वर्तमान समय में औचित्यपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

- वृद्धाश्रमवासियों के पृष्ठभूमिक कारकों का अध्ययन करना।
- उभरती हुई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति वृद्धाश्रमवासियों का प्रत्यक्षीकरण ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- उभरती हुई पीढ़ी में व्याप्त मूल्य संकट के प्रति वृद्धाश्रमवासियों का प्रत्यक्षीकरण उनके पृष्ठभूमिक कारकों के संदर्भ में भिन्न होता है।
- वृद्धाश्रमवासियों में प्रत्यक्षीकृत करते है कि उभरती हुई पीढ़ी में मूल्य संकट व्याप्त है।

शोध की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में भारत के वृद्धाश्रमों (728) का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया । सोद्देश्य न्यादर्शन विधि के माध्यम से न्यादर्श का चयन किया गया । जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित दो वृद्धाश्रमों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

उपकरण

शोध उपकरण में शमशाद हुसैन एवं जसवीर कौर द्वारा निर्मित व मानकीकृत समायोजन अनुसूची (SJOAI-2008) एवं स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रदत्तों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या 4.1

आयु के आधार पर वृद्धाश्रमवासियों का समायोजन

(प्रतिशत में)

समायोजन स्तर आयु	उच्च स्तर	सामान्य स्तर	निम्न स्तर	योग
65 से 75 वर्ष (N=10)	&	100% (10)	&	37.04% (10)
76 से 85 वर्ष (N=14)	&	92.86% (13)	7.14% (1)	51.85% (14)
85 से अधिक (N=3)	&	100% (3)	&	11.11% (3)
योग (N=27)	&	96.30% (26)	3.70% (1)	100% (27)

नोट– कोष्ठक में संख्या तथा कोष्ठक के बाहर प्रतिशत को दर्शाया गया है।

वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया। ऐसा कोई भी वृद्धाश्रमवासी नहीं था जिसका समायोजन उच्च एवं निम्न स्तर का हो।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर ये कहा जा सकता है कि वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन में आयु का विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

तालिका संख्या 4.2

लिंग के आधार पर वृद्धाश्रमवासियों का समायोजन

(प्रतिशत में)

समायोजन स्तर लिंग	उच्च स्तर	सामान्य स्तर	निम्न स्तर	योग
पुरूष (N=16)	6.25% (1)	93.75% (15)	&	59.26% (16)
महिला (N=11)	&	100% (11)	&	40.74% (11)
योग (N=27)	3.70% (1)	96.70% (26)	&	100% (27)

नोट– कोष्ठक में संख्या तथा कोष्ठक के बाहर प्रतिशत को दर्शाया गया है।

वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया । इनमें से कोई भी महिला वृद्धाश्रमवासी ऐसा नहीं पाया गया जिसका समायोजन स्तर उच्च एवं निम्न हो।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर ये कहा जा सकता है कि वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन में लिंग का विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

तालिका संख्या 4.3

शिक्षा के आधार पर वृद्धाश्रमवासियों का समायोजन

(प्रतिशत में)

समायोजन स्तर शिक्षा	उच्च स्तर	सामान्य स्तर	निम्न स्तर	योग
अशिक्षित से कक्षा 12वीं (N=14)	&	100% (14)	&	52% (14)
स्नातक (N=10)	10% (1)	90% (9)	&	37% (10)
परा–स्नातक (N=3)	&	100% (3)	&	11% (3)
योग (N=27)	4% (1)	96% (26)	&	100% (27)

नोट– कोष्ठक में संख्या तथा कोष्ठक के बाहर प्रतिशत को दर्शाया गया है।

वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया। इनमें से ऐसा कोई भी वृद्धाश्रमवासी नहीं था जिसका समायोजन स्तर उच्च एवं निम्न हो।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर ये कहा जा सकता है कि वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन में शिक्षा का विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

निष्कर्ष

- आयु के आधार पर समायोजन स्तर के संबंध में यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि आयु के आधार पर वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है अधिकतर वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया है।
- लिंग के आधार पर भी वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। लिंग के आधार पर अधिकतर वृद्धाश्रमवासियों में सामान्य स्तर का समायोजन पाया गया है।
- शिक्षा के आधार पर वृद्धाश्रमवासियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। शिक्षा के आधार पर देखने पर सभी में समायोजन स्तर सामान्य स्तर का पाया गया ।
- आयु के आधार पर सभी वृद्धाश्रमवासियों का मानना है कि उभरती पीढ़ी में मूल्य संकट व्याप्त है और इन्हे शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है।
- लिंग के आधार पर भी सभी वृद्धाश्रमवासियों का यह मानना है कि वर्तमान पीढ़ी में मूल्यों का ह्रास हुआ है। इसे शिक्षा एवं मूल्यों की जानकारी प्रदान करके दूर किया जा सकता है।
- शिक्षा के आधार पर भी वृद्धाश्रमवासियों का मानना है कि उभरती पीढ़ी में मूल्य संकट व्याप्त है इसका कारण भौतिकता, पाश्चात्य संस्कृति आदि कारण है। इन्हे शिक्षा एवं परिवार व समाज के सहयोग से दूर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा, आर.के., दुबे श्री कृष्ण (2007): मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा पृ.सं. 74
- वर्मा जी.एस.(2009): मूल्य शिक्षा पर्यावरण एवं मानवाधिकार, इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, पृ.सं. 19
- कपिल,एच.के. (1994): अनुसंधान विधियां, हरप्रसाद भार्गव, आगरा,
- कुमारी विमलेश(1996): सामुदायिक स्वास्थ्य, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- कोठारी सी.आर.(1999): रिसर्च मैथोडोलॉजी न्यू एज पब्लिकेशन, तृतीय संस्करण
- पाठक, अरविन्द एवं सच्चिदानन्द (2003): शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,
- पाठक पी.डी. (2007): शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 35 वां संस्करण,
- भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर,मीनाक्षी (2007): शिक्षा अनुसंधान लॉयल बुक डिपो, मेरठ,
- पाण्डेय,रामशकल (2008): मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.सं. 708

*** Corresponding Author:**

डॉ. अलका त्रिपाठी, *व्याख्याता एवं* **पर्वत सिंह राठौड**, *शोधार्थी*

जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर

Mob.- 09667017200, E-Mail - www.parvat.rathore@gmail.com